ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-६५
दिनांक- शुक्रवार, २७ अगस्त, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 30.3 एवं 25.7 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 96 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 90 प्रतिशत, हवा की औसत गति 15.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 0.3 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 3.6 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 29.9 एवं दोपहर में 33.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 43.4 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(28 अगस्त–01 सितम्बर, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 28 अगस्त–01 सितम्बर, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलो में मध्यम से घने बादल छाये रह सकते हैं। अगले 24 घंटों के दौरान गोपलगंज, सीतामढी, शिवहर,मुजफ्फरपुर,दरभंगा, पूर्वी चम्पारण तथा पाश्चिमी चम्पारण के जिलो में भारी वर्षा की सम्भावना है। उसके बाद अर्थात 29 अगस्त से हल्की हल्की वर्षा हो सकती है। एक दो स्थानों पर मध्यम वर्षा भी हो सकती है। अन्य जिलों में पूरे पूर्वानुमान की अवधि में हल्की हल्की वर्षा होने की सम्भावना है। वर्षा की सक्रियता 29 अगस्त से 1 सितम्बर तक कम रहनें की सम्भावना है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 30–34 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 23–26 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 85 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 75 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 12–20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से बेगुसराई, समस्तीपुर तथा वैशाली में पछिया हवा तथा अन्य जिलों में पूरवा हवा चलने का अनुमान है।

• समसामयिक सुझाव

- इस सप्ताह में अच्छी वर्षा हुई है तथा पूर्वानुमानित अवधि में भी वर्षा होने की सम्भावना को देखते हुए जिन खेतों में जल जमाव की स्थिति हो गयी हो उस खेतों में जल निकासी की उचित व्यस्वस्था करें। किसी भी कीटनाशक या दवा का छिड़काव तथा भुरकाव अभी स्थगित रखे या मौसम साफ़ रहने पर करे।
- धान की फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट की सूंडीयाँ तनो में घुसकर क्षती पहुचाती है। प्रारंभिक अवस्था में बीच का भाग भूरापन लिए सुख जाता है, परन्तु नीचली पत्तियाँ हरी रहती है। सुखी पत्तियों को खींचने से वह आसानी से बाहर निकल आती है। इस प्रकार का लक्षण दिखने पर बचाव के लिए फेरोमोन ट्रैप की १२ ट्रैप प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करे। खेतो में ५ प्रतिशत क्षतिग्रस्त पौधें दिखाई देने पर करताप हाईड्रोक्लोराईड दाने-दार दवा का अथवा फिप्रोंनिल ०.३ जी का १० किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें।
- धान की फसल में पत्ती लपेटक (लीफ फोल्डर) कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू धान के पत्तियों के दोनो किनारों को रेशमी धागे से जोड़कर उसके अन्दर रहते है तथा पत्तियों की हरीत्तिमा को खाता है। इस प्रकार का लक्षण दिखने पर बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराईड दाने-दार दवा का १० किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें। धान की फसल में खैरा बीमारी दिखाई पड़ने पर खेतों में जिंक सल्फेट ५.० किलोग्राम तथा २.५ किलोग्राम बुझा चूना का ५०० लीटर पानी में घोल बना कर एक हेक्टेयर में आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- सितम्बर अरहर की बुआई उचाँस जमीन में करें। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर २० किलोग्राम नेत्रजन, ४५ किलोग्राम स्फुर,२० किलोग्राम पोटाश तथा २० किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। अरहर की पूसा-९ तथा शरद प्रभेद उत्तर बिहार के लिए अनुसंशित है। बुआई के २४ घंटे पूर्व २.५ ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए।
- हल्दी, ओल, मिर्च, खरीफ प्याज एवं फूलगोभी में निकाई-गुड़ाई करें। इन फसलों में कीट-व्याधि की निगरानी करें।
- फूलगोभी की रोपाई करें। बोरान तथा मॉलिब्डेनम तत्व की कमी वाले खेत में १०-१५ किलो ग्राम बोरेक्स तथा १-२ किलोग्राम अमोनियम मालिब्डेट का व्यवहार खेत की तैयारी के समय करे।
- पत्तागोभी की अगात किस्मों की बुआई नर्सरी में करें। इसके लिए प्राइड ऑफ इण्डिया, गोल्डेन एकर, पूसा मुक्ता, पूसा अगेती एवं अर्ली ड्रम हेड किस्में अनुशंसित है।
- टमाटर की काशी विशेष, काशी अमन, स्वर्ण लालिमा, स्वर्ण नवीन, अर्का आभा किस्मों की नर्सरी उथली क्यारियों में पंक्तियों में गिरावें। सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें।
- परवल की राजेन्द्र परवल-१, राजेन्द्र परवल-२, एफ०पी०-१, एफ०पी०-३, स्वर्ण रेखा, स्वर्ण अलौकिक, आई०आई०भी०आर०-१ आदि किस्मों की रोपनी संपन्न करें।
- मूली की अगात किस्मों की बुआई करें। इसके लिए पूसा चेतकी, पूसा देशी, पूसा हिमानी, जौनपुरी जापानी सफेद, पूसा रश्मि, जापानी सफेद, पंजाब सफेद, अर्का निशान्त आदि प्रभेद अनुशंसित है। बीजदर ४ से ५ कि०ग्रा० प्रति हेक्टेयर तथा २५X१० से०मी० की दुरी पर बुआई करें।
- भिंडी की फसल में पीला मोजैक वायरस से ग्रस्त पौधों की निगरानी करें। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसमें पौधे की शिराए पीली होकर मोटी हो जाती है और बाद में पत्तियाँ भी पीली परने लगती है। बीमारी की उग्र अवस्था में तने एवं फलों का रंग भी पीला पर जाता है। रोगग्रस्त पौधा एवं फलियाँ छोटे रह जाते है। रोग के विस्तार से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।

आज का अधिकतम तापमानः 29.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.4 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 26.3 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.8 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी